रामायगा-सन्देश

्या मेम-राज्य

"मो सम दीन न दीनहित, तुम्ह समान रघुवीर। अस विचारि रघवंश-मणि, हरह विषम-अच-भीर॥"

> लेखक— सुर्यं सारायण